व्यापार

आंतरिक खपत बढ़ाकर मेन्यु. के मिलेगा प्रोत्साहन

अलौह धातु के छोटे-मध्यम उद्योग को सस्ते ऋण के साथ आटोमेशन की सहायता जरूरी

साक्षात्कार

सैफी रंगवाला

अलौह धातु उद्योग और व्यापार का अधिकांश कच्चा माल (धातु भंगार) विदेश से आता है। इसके अलावा फिनिश्ड निर्यात भी होता है। देश में बदली केन्द्र सरकार, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थिति, अर्थ व्यवस्था में शिथिलता, ऊंची मुद्रास्फीति और डालर के साथ रुपए में वृद्धि ये सभी बातें अलौह धातु बाजार को सीधे असर डालती हैं।

'व्यापार' ने इस बारे में विस्तृत चर्चा बाम्बे मेटल एक्सचेंज के भूतपूर्व प्रमुख सुरेन्द्र मरडिया के साथ की। वे अलौह धातु उद्योग के साथ तीन दशक से जुड़े हैं। इसके अलावा, वे बैंकिंग क्षेत्र, लायंस क्लब और आईएमसी में सक्रिय हैं।

केन्द्र की एनडीए सरकार के प्रथम बजट के बारे में कुछ कहेंगे? अलौह धातु के लिए सकारात्मक है या नकारात्मक?

केन्द्रीय बजट मेरे मतानुसार माइल्ड (हल्का) है। संभवतः वित्त मंत्री को अधिक विचार करने का समय नहीं मिला। हालांकि, मुझे लगता है कि आगामी वित्तीय वर्ष में किसी बड़े कदम की घोषणा कर सकती है। फिलहाल मेन्यु. को बढ़ाने के उद्देश्य से कुछ प्रावधान किए गए हैंलेकिन विशाल नए प्रोजेक्ट शुरू होने में समय लगता है। सरकार ने कुछ सकारात्मक संकेत अवश्य दिया है।

सुरेन्द्र मरडिया
(भूतपूर्व अध्यक्ष बाम्बे मेटल एक्स.)

तेल का भाव बढ़े, रुपया और कमजोर पड़े तो आयात महंगा होने से हमारी अर्थ व्यवस्था पर दबाव पड़ेगा तो स्थिति और बिगड़ेगी। फिलहाल अंतरराष्ट्रीय स्थिति अच्छी नहीं है। हमें स्थानीय खपत बढ़ाने और आयात घटाने पर ध्यान केन्द्रित करना जरूरी है।

अलौह धातु उद्योग की वित्त प्रवाहिता बढ़े तो लाभ होगा?

केन्द्र की मेन्युफैक्चरिंग को बढ़ाने की नीति के साथ लगातार आरबीआई का उद्देश्य अच्छा है। अर्थव्यवस्था का दायरा बढ़ाना जरूरी था लेकिन सरकार को छोटे और मध्यम इकाइयों को पर्याप्त ऋण के लिए सजग रहना पड़ेगा। अभी तक का हमारा अनुभव अच्छा नहीं है। बड़ी और बीमार इकाइयों को उबारने के लिए बैंकें अधिक ध्यान देती हैं।

स्थानीय अलौह धातु का दायरा बढ़ाने के लिए सरकार को क्या विशेष करना चाहिए?

महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए ग्राम विकास पर ध्यान देना ही पड़ेगा। ग्रामीण हाउसिंग, बिजलीकरण किसी की अच्छी कीमत किसानों को मिलने से भी भारत की आंतरिक क्रय शक्ति बढ़ेगी। जिससे लोग स्वतः खर्च बढ़ाएंगे। इसके साथ देश में सामाजिक और स्वास्थ्य सुरक्षा सरकार को देनी पड़ेगी। इससे मौजदा सोना-चांदी और फिक्स्ड डिपाजिट

अलौह धातु उद्योग के बारे में बजट निराशाजनक है। स्पेशियल एडिशनल ड्यूटी भंगार आयात पर से हटाने की मांग स्वीकार नहीं की गई। सस्ता आयात बंद करने की राय भी नहीं सुनी गई।

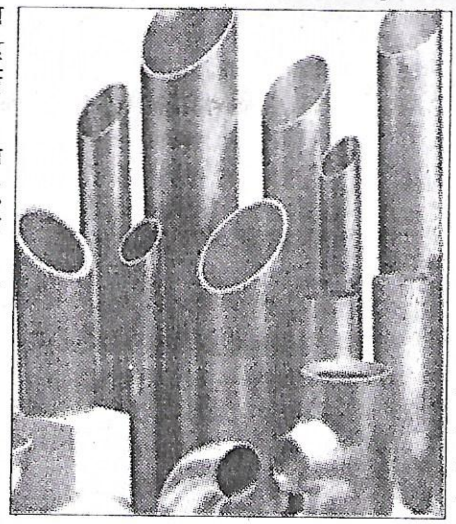

फिलहाल मेन्यु. इंडेक्स सुधरा है। अलौह धातु व्यापार में नया आर्डर बढ़ा है?

सुधरा मेन्यु. इंडेक्स सिर्फ सेंटीमेंटल है। उद्योग को आगामी समय में अर्थव्यवस्था सुधरने की आशा से फिलहाल इंडेक्स में थोड़ी चमक दिखाई देती है लेकिन यह ट्रेंड जारी रखने के लिए आगामी समय की प्रतीक्षा करना हितकारी है। अभी तक अलौह धातु उद्योग में नए आर्डर की संख्या में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है। थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। नई सरकार का उद्देश्य अच्छा है।

अमेरिकन अर्थव्यवस्था सुधरने से अलौह धातु उद्योग का निर्यात बढ़ने की कितनी गुंजाइश है?

अमेरिका द्वारा संभवतः पहली बार क्रूड तेल का बड़े पैमाने पर निर्यात शुरू करने से वृद्धि दर बढ़ी है लेकिन औद्योगिक अथवा कंज्यूमर की खपत बढ़े तो ही अलौह धातु उद्योग का निर्यात बढ़ेगा।

इराक-गाजा और यूक्रेन की स्थिति बिगड़ेगी तो हमारे उद्योग पर कितना असर पड़ेगा?

अलौह धातु उद्योग पर सीधा असर पड़ने की संभावना कम है। वस्तुतः क्रूड में होता निवेश घटेगा और अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी।

अलौह धातु पर रुपए के मौजूदा गिरावट से असर पड़ेगा, सरकार को क्या करना चाहिए?

वैश्विक स्तर की अनिश्चितता को देखते हुए और लगातार स्थानीय विकास जारी रखने के लिए सरकार को छोटे और मध्यम उद्योगों को सस्ते ऋण के साथ आटोमेशन और इनोमेशन का मार्ग सरल बनाना पड़ेगा। जिससे रुपए की घटबढ़ से महंगे होते कच्चे माल की औसत कीमत बरकरार रखकर फिनिश्ड प्रोडक्ट तैयार हो सकता है। हालांकि, पिछले वर्ष अलौह धातु उद्योग को मुद्रा के कारण काफी नुकसान हुआ था। इससे फिलहाल स्थानीय उद्योगपति अधिक सचेत हैं। इसके साथ प्रोत्साहन द्वारा निर्यात बढ़ाकर हम मुद्रा की सहायता कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए चालू वर्ष के लिए तांबा के भाव के बारे में क्या भविष्यवाणी करेंगे?

वैश्विक बाजारों में निकट में बड़े पैमाने पर मांग बढ़ने की संभावना नहीं है। फिलहाल तांबा की आपूर्ति ज्यादा है। जिससे हमारे मतानुसार कोई बड़ा उथल-पुथल न हो तो तांबा का भाव प्रति टन ६५०० से ७३०० डालर के आसपास रहेगा। हालांकि, सट्टागत घटबढ़ से इनकार नहीं किया जा सकता।

व्यापार